साहित्यिक परिस्थितियां → यह युग पारस्परिक कलह और बाह्य संघर्षों का युग था। इस समय "राजशेखर" जैसे श्रेष्ठ साहित्यकार हुए। बारहवीं शताब्दी में रचित श्री हर्ष का "नैषधचरित" इस कथन का प्रमाण है। तात्कालीन साहित्यिक स्थिति उतना अच्छी नहीं थी।

इस युग में जयदेव जैसे सुकवि, कुन्तक महिम भट्ट, क्षेमेन्द्र, हेमचन्द्र और विश्वनाथ जैसे तत्वविद् आचार्य और सोमदेव जैसे काव्यकार इसी समय हुए। परन्तु आदिकालीन साहित्य पर इनका कोई प्रभाव नहीं पड़ा। इस समय "कल्हण" जैसे साहित्यकार "राजतरंगिणी" कृति सृजनकर समाज को एक नई दिशा दिया।

इस काल में वज्रयानी और सहजयानी सिद्धों, नाथ पंथी योगियों, जैन धर्म के अनुयायी विरक्त मुनियों एवं गृहस्थ उपासकों और वीरता तथा शृंगार का चित्रण करने वाले चारणों भाटों आदि की रचनाएं विशेषकर हुई। इस युग में कुछ ऐसे भी साहित्यकार हुए जो अन्य विषयों में कविताएं की। इस युग में आचार्यों की प्रतिभा चमकती थी। साथ में संस्कृत में यह और भी शीर्ष स्थान पर थी।

सांस्कृतिक परिस्थितियां :— आदिकाल हिन्दू-मुस्लिम संस्कृतियों के परस्पर मिलन का काल है। हर्षवर्धन के समय हिन्दू संस्कृति प्रत्येक क्षेत्र में उन्नति के चरमशिखर पर आरूढ़ हो चुकी थी। संगीत, चित्र, मूर्ति एवं भवन-निर्माण आदि कलाओं में जातीय गौरव अभिलक्षित हो रहा था। सभी ललितकलाएँ धर्म से अनुप्रमाणित थी। "अरब" इतिहासकार "अलबरूनी" तथा महमूद गजनवी इन मन्दिरों की भव्यता, विशालता तथा धर्मानुप्राणता को देखकर आश्चर्य चकित रह गये थे।

Scanned with CamScanner

इस काल में अब संस्कृति धीरे-धीरे मुस्लिम संस्कृति से प्रभावित होने लगी। अब भारत उत्सव, मेलों, त्योहारों, वेशी-भूषा, आहार-विहार तथा मनोरंजन आदि पर मुस्लिम रंग मिलने लगा। यहां के गायन-वादन तथा नृत्य पर मुस्लिम छाप स्पष्ट है।

मुस्लिम बादशाहों के अनुकरण पर हिन्दू नरेशों के राजदरबारों में मुस्लिम कलाये प्रवेश पाने लगे मूर्ति कलाओं को छोड कर अन्य भारतीय ललित कलाओं में मुस्लिम कला की कलम गहरे रूप से लगी।

बलराम कुमार
(mmर्व)

Scanned with CamScanner